पुरखोंकी सीख – १

- अनाज कहा, तुम मुझे अनाज में रखो, मैं तुम्हें इंसान में रखता हूँ।

- अगर हम दूसरों की अच्छाई को बर्बाद करते हैं, तो हमारी अपनी अच्छाई भी बर्बाद हो जाती है। जो बोते हैं वही पाते हैं| यहाँ तक कि हृदय से किया गया कर्म भी।
- कुछ लोग अपने जीवन के अंतिम क्षण तक खुश रहते हैं, जबकि कुछ लोग संघर्ष करते रहते हैं। यह दृष्टिकोण और कर्म-बंधन पर निर्भर करता है।

- खुशी के लिए लड़ना नहीं पडता।

-जब लोग आपको अपने जीवन में याद रखते हैं, तो यह एक इंसान के रूप में आपकी सफलता है।

- जो हमसे कमज़ोर है उसकी देखभाल करना हमारा स्वाभाविक कर्तव्य है।

- पक्षियों को दाना-पानी देना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है, क्योंकि हमने पेड़ों को काटकर और छोटे प्राकृतिक तालाबों को बंद करके उनके एकमात्र घर को अपने दूसरे घर के रूप में अतिक्रमण कर लिया है।

- ईश्वर के लिए सभी आत्माएँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं; चाहे वह हाथी की हो या चींटी की।

- अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए हमेशा तैयार और तत्पर रहें क्योंकि अवसर कभी दस्तक नहीं देता।